अशोक

③

डॉ० उमेश मल्लिक
इतिहास विभाग
भा० ति० वि० शिक्षक

~~दिग्विजय की नी~~

दिग्विजय की नीति :. कलिंग-विजय

अशोक विश्व के महानतम सम्राटों में से एक था। 269 ई० पूर्व में वह सिंहासन पर आसीन हुआ। तत्पश्चात अशोक ने अपने पूर्वजों की दिग्विजय की नीति को अपनाया तथा सम्पूर्ण भारत को विजित करना चाहता था। कल्हण की राजतरंगिणी से मालूम होता है कि पहले उसने कश्मीर को विजय किया। कश्मीर की घाटी में अनेक स्तूपों का निर्माण किया था। इसके बाद कलिंग-विजय किया जो भारत के दक्षिण-पूर्व में स्थित था। कलिंग नन्द सम्राटों के अधीन था किन्तु उनके पतन के पश्चात कलिंग ने अपनी स्वतंत्रता घोषित कर दी। उस समय अशोक का राज्य कश्मीर से नैलोर तक तथा बंगाल से हिरात तक फैला था। अतः कलिंग विजय प्राप्त करने के लिए अशोक के राज्याभिषेक के आठवें वर्ष में कलिंग पर आक्रमण कर दिया।

कलिंग देश बंगाल की खाड़ी के समीप महानदी तथा गोदावरी नदियों के मध्य स्थित था। यह एक शक्तिशाली एवं सम्पन्न राज्य था। अशोक कलिंग जैसे शक्तिशाली राज्य को मौर्य साम्राज्य के लिए खतरनाक समझ रहा था। उसे आशंका थी कि कलिंग मौर्य साम्राज्य के विरुद्ध विद्रोह कर सकता है। इसके अतिरिक्त कलिंग सामुद्रिक व्यापार का केन्द्र था। इस कारण भी अशोक कलिंग पर अधिकार करना चाहता था। उसने एक विशाल सेना के साथ दक्षिण की ओर प्रस्थान किया और कलिंग पर चढ़ाई कर दी। यह अत्यन्त भयंकर युद्ध था। रणक्षेत्र में १ लाख व्यक्ति मारे गये, डेढ़ लाख बन्दी हो गये तथा उससे कई गुणा घायल हो गये।

D

बहुत से सैनिक अंग-भंग हो गये। इतने व्यक्तियों की हत्या देखकर अशोक का ~~हृदय~~ हृदय पिघल उठा। उसे युद्ध से घृणा हो गई तथा रणभूमि में ही उसने प्रतिज्ञा की कि अब वह जीवन भर युद्ध नहीं करेगा। उसने अपने पूर्वज के द्वारा मगध की दिग्विजय की नीति का त्याग करके धर्म विजय की नीति को अपना लिया। इस प्रकार कलिंग का युद्ध मगध एवं भारत के इतिहास की एक महत्वपूर्ण घटना मानी जाती है क्योंकि इस युद्ध के द्वारा लगभग 300 वर्षों से चली आती हुई नीति का अशोक ने परित्याग कर दिया। उसने अब सर्वकल्याण और सर्वहित का मार्ग अपना लिया। अशोक ने साम्राज्यवादी नीति का परित्याग कर धर्म-प्रचार की नीति अपनायी। ~~रणघोष का स्थान धम्म-घोष ने लिया~~। तथा ब्राह्मण धर्म के स्थान पर बौद्ध धर्म ग्रहण कर लिया।

अशोक ने प्रतिज्ञा की कि "धर्म की घोषणा करूँगा धार्मिक क्रियाओं का प्रचार करूँगा, जो लोग उसे सुनेंगे, उनके अनुसार आचरण करने के लिए प्रेरित होंगे, उनका आध्यात्मिक विकास होगा और धर्म की वृद्धि के साथ उनकी अभिवृद्धि होगी।" अशोक की आकांक्षाएं तथा साम्राज्यवादी कामनाएँ विश्वकल्याण में परिवर्तित हो गयी। इस प्रकार कलिंग युद्ध अशोक के जीवन में एक युगान्तरकारी घटना था।